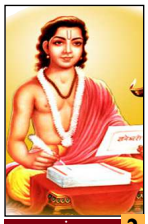

पृष्ठ संख्या 2

डाक पंजीयन संख्या- RJ/JPM/160/2024-26

RNI NO.- RAJHIN/2021/80841

संस्कार सृजन

हिन्दी पाक्षिक

CBC CODE-134222

सम्पादकः राम गोपाल सैनी
मो.: 9214996258

वर्षः 04 | अंकः 21 | पृष्ठ : 4 | जयपुर, शनिवार 7 फरवरी, 2026 | मूल्यः 05 रू. | वार्षिक मूल्य : 150 रू.

गोल्डन बेल्स एकेडमी में हुआ हेल्दी बेबी कंपटीशन का आयोजन

नन्हें मुन्नों ने किया माता पिता के साथ रैम्प वाक

जयपुर (संस्कार सृजन)

चौमूं शहर के सामोद रोड पक्का बंधा स्थित गोल्डन बेल्स एकेडमी में हेल्दी बेबी कंपटीशन का आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक रामलाल शर्मा ने सरस्वती माता के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया । विशिष्ट अतिथि के रूप में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर कीर्ति सोलंकी, शिक्षाविद बाबूलाल कुमावत, शिक्षाविद डॉक्टर अनुपमा सूद, शिक्षाविद कविता स्वामी, फाउंडर मेंबर कृष्ण कुमार सैनी, हिम्मत सिंह राजावत, माधव शर्मा, कीर्ति शर्मा ने शिरकत की ।

हेल्दी बेबी कंपटीशन में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने अपने अभिभावकों के साथ रैंप वॉक किया और अपने हेल्दी होने का प्रमाण दिया । स्कूल की डायरेक्टर जगविन्द्र कौर ने बताया कि हेल्दी बेबी कंपटीशन में माही यादव ने प्रथम, चित्रांशा सैनी ने द्वितीय और ज्योति झाझडा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया । उन्होंने आगे बताया कि इस कंपटीशन का मुख्य उद्देश्य बच्चों और अभिभावकों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाना था । स्कूल प्रिंसिपल सरोज चौधरी ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान स्कूल के स्टूडेंटस द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी पेश की गई । साथ ही दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों को फेयरवेल भी दिया गया ।

श्री कर्ण नरेंद्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर के कृषि वैज्ञानिकों ने किया बगीचों का सर्वे

चौमूं (संस्कार सृजन)। श्री कर्ण नरेंद्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर के कृषि वैज्ञानिकों ने चौमूं, सामोद, हाथनोदा, निमड़ी, मोरिजा इत्यादि गांवों में फलों के बगीचों का सर्वे किया।

जिसमें बेर में छाछया रोग का प्रकोप अबकी बार 20% तक औसतन देखा गया है । वहीं कुछ बगीचों में तो 40% तक रोग देखा गया। बागवानों को सलाह दी गई है कि अगले साल रोग आते ही फफूंदी नाशक का छिड़काव करें । क्योंकि अब इसे नियंत्रित करना कठिन है । इसके अलावा बेर में काली पत्ती रोग, आंवला में डाई बैक, बेलपत्र में जड़ गलन व झुलसा रोग देखा गया ।

इस दौरान डॉक्टर मदन लाल चौधरी (उद्यान वैज्ञानिक), डॉक्टर रामफूल घासोलिया (पादप रोग वैज्ञानिक) व कृषक श्याम लाल सैनी मौजूद रहे ।

डॉ.के.एल. कुमावत निर्विरोध बने चौमूं प्रेस क्लब के अध्यक्ष

चौमूं / जयपुर (संस्कार सृजन)। प्रेस क्लब चौमूं के चुनाव नगरपरिषद सभागार में शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सर्वसम्मति से संपन्न हुए। चुनाव प्रक्रिया में सभी पदों पर निर्विरोध चयन किया गया। वरिष्ठ पत्रकार डॉ.के.एल. कुमावत को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। वहीं उपाध्यक्ष पद पर विकास शर्मा, महामंत्री पद पर बी.एल. भंडारी तथा कोषाध्यक्ष पद पर संदीप अग्रवाल निर्वाचित हुए। चुनाव अधिकारी जितेंद्र रागेय ने बताया कि सभी सदस्यों की सहमति से चुनाव प्रक्रिया पूरी की गई, जिससे संगठन में एकजुटता और आपसी सहयोग का संदेश गया है। अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद डॉ.के.एल. कुमावत ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रेस क्लब को और अधिक मजबूत व सक्रिय बनाने के लिए वे पूरी निष्ठा से कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि पत्रकारों की समस्याओं के समाधान, उनके हितों की रक्षा तथा निष्पक्ष पत्रकारिता को बढ़ावा देना उनकी प्राथमिकता रहेगी।

इस मौके पर पूर्व अध्यक्ष दिवाकर भारती, आशीष तिवाड़ी, रामवतार शर्मा, विनोद कुमार शर्मा, भगवान सहाय यादव, जयपाल सिंह, डॉ.सीता राम कुमावत, गजानंद कुमावत, विष्णु कुमावत, भाग सिंह, अहसान, कैलाश पाराशर सहित अनेक पत्रकार बंधु मौजूद रहे।

श्री शिरडी साईं मंदिर का त्रिदिवसीय 15वाँ पाटोत्सव

भव्य कन्या प्रसादी और साईं सत्संग के साथ हुआ संपन्न

चौमूं (संस्कार सृजन)

चौमूं तहसील के ग्राम ईटावा भोपजी स्थित श्री शिरडी साईं मंदिर का त्रिदिवसीय 15वाँ पाटोत्सव अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ मनाया गया । हजारों की संख्या में साईं भक्तों ने दर्शन किए ।

मंदिर महंत कैप्टन पृथ्वी सिंह नाथावत ने बताया कि पाटोत्सव के प्रथम दिवस पर श्री राम भक्त मंडल द्वारा विशाल संगीतमय सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया । मंदिर परिसर को रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया गया। द्वितीय दिवस पर बाबा का महाभिषेक, हवन और विशाल कन्या प्रसादी का आयोजन हुआ । महिला भक्त मंडल चौमूं द्वारा बाबा के भजनों की सुमधुर प्रस्तुति दरबार में दी गई।

समापन दिवस पर देश विदेश के रंग-बिरंगे फूलों से बाबा का भव्य श्रृंगार कर मनमोहक झांकी सजायी गयी । साथ ही संज्या सती माता की भी मनमोहक झांकी सजायी । महंत कैप्टन पृथ्वी सिंह नाथावत ने कन्या पूजन कर आशीर्वाद लिया । सुबह 11 बजे से विशाल कन्या प्रसादी का आयोजन हुआ जिसमें करीब 2000 कन्याओं ने प्रसादी ग्रहण की। संत समागम का कार्यक्रम भी धूमधाम से संपन्न हुआ ।वहीं कार्यक्रम में पधारे गौरक्षक दल के अध्यक्ष शेरसिंह कुमावत का माला,दुपट्टा और फोटो भेंट कर सम्मान किया ।

इस दौरान गायक ब्रिजेश कुमार निवाणा एंड पार्टी और भंवर खां ने साईं बाबा को मधुर भजनों से रिझाया । मधुर भजनों पर भाव विभोर होकर महिलाएं नाचने पर मजबूर हो गयी ।

इस अवसर पर रामोतार, बलदेव, तोफ़ान जांगिड़, विक्रम सिंह गौड़, जयसिंह गौड़, हनुमान सिंह चंद्रावत, दीपेन्द्र सिंह चंद्रावत, शिशुपाल यादव , नेहा शेखावत, दीप सिंह, रविन्द्र सिंह, मंगल सैनी, सुप्यार कँवर, श्याम कँवर उदावत, कंचन टांक, गोविन्द कँवर चंद्रावत, कालू भिंडा, बन्ना सा, सोमनाथ शर्मा, जितेन्द्र सिंह नाथावत,भूपेन्द्र सिंह नाथावत, नवदीप सिंह नाथावत, अंजलि नाथावत, आयुषी नाथावत, अनुष्का नाथावत सहित हजारों की संख्या में साईं भक्त मौजूद रहे ।

धूमधाम से मनाया 77वाँ गणतंत्र दिवस

जयपुर (संस्कार सृजन) । 77वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर राजकीय उ. मा. विद्यालय दुर्गा का बास में भव्य एवं गरिमामय समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम देश भक्ति अनुशासन एवं सांस्कृतिक उत्साह से परिपूर्ण रहा ।

समारोह की अध्यक्षता संस्था प्रधान नीतू सैनी ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शंकर लाल नारोलिया रहे । विशिष्ट गरिमा प्रदान करते हुए ग्राम पंचायत प्रशासक गंगा देवी यादव एवं स्थानीय वार्डपंच पवन कुमार बलवंत उपस्थित रहे ।

कार्यक्रम का कुशल एवं प्रभावी मंच संचालन रघुवीर सिंह पवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि जीवन राम शर्मा तथा पशु चिकित्सक डॉक्टर रामचंद्र यादव, जीवनराम बिलुनिया, सोहन लाल, गंगाराम, पांचूराम डागर, गोपीराम यादव, की गरिमामय उपस्थिति रही ।

समारोह का शुभारंभ ध्वजारोहन एवं राष्ट्रगान से हुआ। इसके पश्चात विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम देशभक्ति गीत प्रस्तुतियां की विद्यार्थियों के उत्साह और प्रस्तुति ने उपस्थित जनसमूहो का मनमोह लिया ।

मुख्य अतिथि संस्था प्रधान ने संविधान के मूल्यों न्याय स्वतंत्रता समानता का पालन करने का संदेश दिया एवं समारोह का समापन राष्ट्रभक्ति के नारों मिष्ठान वितरण के साथ संपन्न हुआ । कार्यक्रम में सभी के हृदय में देश प्रेम और गौरव की भावना को सुदृढ किया एवं भामाशाह एवं ग्रामीणजनों द्वारा बच्चों एवं बच्चियों को इनाम वितरण किया गया ।

संपादकीय

मणिपुर में देर से दुरुस्त फैसला

मणिपुर में युमनाम खेमचंद सिंह के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के साथ एक लोकतांत्रिक सरकार फिर से कायम हो गई है। इसके साथ ही लगभग एक साल से जारी राष्ट्रपति शासन का अंत हो गया है। दरअसल, राज्य में 13 फरवरी, 2025 को उस समय राष्ट्रपति शासन लगाना पड़ा था, जब मई 2023 से जारी जातीय हिंसा के मद्देनजर 9 फरवरी, 2025 को तत्कालीन मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने इस्तीफा दे दिया था। मणिपुर की हिंसा में लगभग 300 लोगों की मौत हुई, हजारों विस्थापित हुए और उनके घर या दूसरी संपत्तियां स्वाहा हो गईं।इस हिंसा ने राज्य के अलग-अलग नस्लीय समूहों, खासकर मणिपुर के मैदानी इलाकों में रहने वाले बहुसंख्यक मैतेई समुदाय और पहाड़ियों पर बसने वाले कुकी-जो समुदाय के बीच गहरी दरार पैदा कर दी है। हिंसा का तात्कालिक कारण मणिपुर हाईकोर्ट द्वारा 14 अप्रैल, 2023 को दिए एक फैसले से उपजा विवाद था, जिसमें मैतेई समुदाय को अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा देने की सिफारिश की गई थी। हालांकि, बाद में सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के उस फैसले की आलोचना की थी। बहरहाल, सिंगजामेई विधानसभा क्षेत्र के 62 वर्षीय भाजपाई विधायक खेमचंद सिंह पहले मणिपुर विधानसभा के अध्यक्ष और बाद में बीरेन सिंह सरकार में मंत्री रह चुके हैं। उन्हें एक कुशल प्रशासक के रूप में देखा जाता है और अपेक्षाकृत 'उदार मैतेई' चेहरा बताया जाता है। गौर करने लायक बात यह है कि उन्होंने नस्लीय संघर्ष को नियंत्रित करने के बीरेन सिंह के तरीके की आलोचना की थी और कहा जाता है कि उन्होंने उन्हें शुरू में ही इस्तीफा देने का सुझाव दिया था। उनके इन्हीं विचारों के कारण उनके नेतृत्व में उम्मीद की किरण दिखी हैं। मणिपुर में गहरी हो चुकी नस्लीय खाई को प्रतीकात्मक और राजनीतिक रूप से पाटने के प्रयास के तहत नई सरकार ने सत्ता में साझेदारी की नीति अपनाई है। इसमें कुकी-जो समुदाय से नेमचा किपगेन और नागा समुदाय से लोसी दिखो को उप-मुख्यमंत्री बनाया गया है। गौरतलब है कि 60 सदस्यीय मणिपुर विधानसभा का कार्यकाल अगले साल फरवरी तक है, लेकिन राष्ट्रपति शासन लागू होने के बाद राज्य विधानसभा को निलंबित कर दिया गया था।मणिपुर में सालों की हिंसा से पैदा हुए दुख व अविश्वास के चलते इस नई राजनीतिक पहल के प्रति नागरिक समाज और राजनीतिक नेताओं की ओर से मिली-जुली और बेहद सतर्क प्रतिक्रियाएं आई हैं। घाटी में मैतेई समुदाय के नागरिक समूहों के बीच लोकतांत्रिक सरकार की बहाली को लेकर नपी-तुली स्वीकृति है। हालांकि, मणिपुर अखंडता समन्वय समिति (कोकोमी) जैसे संगठन भाजपा के इस कदम को संदेह भरी नजरों से देख रहे हैं और इस कवायद को पार्टी की छवि सुधारने की सियासी पैंतरेबाजी मान रहे हैं। मैतेई समुदाय के इस संगठन ने दिखावा करने के बजाय सुरक्षा और विश्वास-निर्माण की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया है। मैतेई समुदाय का मानना है कि भाजपा की यह नई रणनीति राज्य में चल रहे नस्लीय संघर्ष के ठोस या तत्काल समाधान की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं है। फिर भी, मैतेई आबादी के एक हिस्से में इस बात को लेकर उम्मीद है कि एक नया और कम विवादास्पद नेता शासन-प्रशासन के कामकाज में सुधार कर सकता है। इसके विपरीत, पहाड़ियों पर बसे कुकी-जो समुदाय की प्रतिक्रिया खारिज करने वाली है। इसके नेताओं का तर्क है कि सिर्फ मुख्यमंत्री बदलने से अलग प्रशासन या केंद्र शासित क्षेत्र की उनकी मुख्य मांग पूरी नहीं होती है। कुकी-जो समुदाय मणिपुर में चल रहे इस संकट के लिए पूरी तरह से भाजपा को जिम्मेदार मानते हैं। राज्य में मुख्य विपक्षी कांग्रेस भी आलोचनात्मक रही है। उसका तर्क है कि इस बदलाव का राजनीतिक परिदृश्य पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा और इस समस्या ने राज्य और केंद्र, दोनों जगह सत्ता में बैठी भाजपा की अक्षमता को उजागर कर दिया है। बहरहाल, इस पूरे परिदृश्य में नवनियुक्त मुख्यमंत्री खेमचंद सिंह के सामने कई कठिन चुनौतियां हैं। उनकी तात्कालिक चुनौतियों में कानून-व्यवस्था बहाल करना, मानवीय संकट से निपटना, बुरी तरह विभाजित राज्य के समुदायों के बीच भरोसा बहाल करना, हजारों विस्थापित लोगों की वापसी और उनका पुनर्वास शामिल है। उनकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि क्या वह इस गहरे तौर पर बंटे हुए समाज में एक भरोसेमंद और निष्पक्ष मध्यस्थ के रूप में काम कर पाएंगे? यकीनन, उनकी 'उदार' छवि कुकी-जो समुदाय के साथ जुड़ने में मदद कर सकती है, लेकिन उन्हें बहुसंख्यक मैतेई समुदाय की उम्मीदों और चिंताओं पर भी ध्यान देना व उनका समाधान करना होगा। भाजपा के अंदर, इस बात को लेकर उम्मीद है कि उनका अनुभव और सुलहकुल की छवि राज्य को स्थिरता प्रदान कर सकती है, लेकिन समुदायों के बीच लगातार अलगाव के माहौल में उन्हें कड़ी निगरानी में काम करना होगा।

12 या 13 फरवरी कब है विजया एकादशी? इस व्रत में भूलकर भी ना करें ये गलतियां

सनातन धर्म में एकादशी के व्रत का बहुत महत्व होता है। हर महीने दो एकादशी पड़ती है। पहली एकादशी शुक्ल पक्ष में आती है तो वहीं दूसरी वाली कृष्ण पक्ष में। एकादशी पर सृष्टि के रचियता भगवान विष्णु की पूजा होती है। हिंदू धर्म शास्त्रों के अनुसार जो लोग एकादशी पर सच्चे मन के साथ भगवान विष्णु को पूजते हैं, उन लोगों की सारी मनोकामनाएं जरूर पूरी होती हैं। फरवरी महीने की पहली एकादशी विजया एकादशी है। इसके बाद आमलकी एकादशी पड़ने वाली है। कई लोग विजया एकादशी की तारीख को लेकर कन्फ्यूज हैं। सबसे पहले जानेंगे कि आखिर ये फरवरी में किस दिन पड़ रही है? साथ ही जानेंगे कि विजया एकादशी की पूजा के दिन कौन-कौन सी गलतियां करने से बचना चाहिए?

कब है विजया एकादशी? हिंदू पंचांग के हिसाब से इस साल विजया एकादशी 13 फरवरी को है। इस दिन शुक्रवार है। इस दिन पूजा के लिए शुभ मूहूर्त सुबह 6:26 बजे से लेकर 9:15 बजे तक होगा। एकादशी की पूजा पारण के बिना अधूरी ही होती है। ऐसे में व्रत का पारण करना भी जरूरी है। व्रत का पारण 14 फरवरी की सुबह कर लें। **विजया एकादशी व्रत का महत्व**-हिंदू धर्म शास्त्रों में विजया एकादशी को काफी खास माना गया है। ये फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष को पड़ता है। फाल्गुन के महीने में पड़ने की वजह से इस एकादशी के व्रत का महत्व और भी बढ़ जाता है। शास्त्रों के अनुसार इस व्रत को श्रीराम ने भी रखा था और लंकापति रावण का वध करके मां सीता को बचाया था। माना जाता है कि विजया एकादशी वाला व्रत रखने वाले को स्वंय भगवान विष्णु अपनी कृपा बरसाते हैं। साथ ही ऐसा भी कहा जाता है कि इस दिन व्रत रखने से समस्त पापों का नाश भी होता है।

विजया एकादशी पर ना करें गलतियां

1. विजया एकादशी की पूजा के दौरान काले या फिर किसी भी गहरे रंग के कपड़े ना पहनें। पूजा में शामिल होने के लिए पीला, नारंगी या फिर लाल रंग के कपड़े पहनना सही माना जाता है। माना जाता है कि भगवान विष्णु का प्रिय रंग पीला है। ऐसे में कोशिश करें कि विजया एकादशी पर इसी रंग के कपड़े ही पहनें।

2. शास्त्रों के अनुसार विजया एकादशी के दिन चावल नहीं खाना चाहिए। धार्मिक कथा के अनुसार एक बार मां के गुस्से से बचने के लिए महर्षि मेधा ने अपने शरीर को त्याग दिया था। इसके बाद उनका शरीर जमीन में ही समा गया था। कहा जाता है कि इस दिन एकादशी थी और महर्षि मेधा बाद में चावल और जौ के रूप में उत्पन्न हुए थे। यही वजह है कि एकादशी के दिन चावल खाना सही नहीं माना जाता है। इसे खाने से एकादशी की पूजा खंडित होती है।

3. एकादशी के दिन भूलकर भी तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए। साथ ही इसकी मंजरी से भी दूर हना चाहिए।

अमूल्य ज्ञान का बोध

✳ सोलह संस्कार

1.गर्भाधान संस्कार 2. पुंसवन संस्कार 3. सीमन्तोन्नयन संस्कार 4. जातकर्म संस्कार 5. नामकरण संस्कार 6.निष्क्रमण संस्कार 7. अन्नप्राशन संस्कार 8. मुंडन संस्कार 9. कर्णवेधन संस्कार 10. यज्ञोपवीत संस्कार 11. वेदारंभ संस्कार 12. केशांत संस्कार 13. समावर्तन संस्कार 14. विवाह संस्कार 15. सन्यास संस्कार 16. अन्त्येष्टि संस्कार

✳ अष्ट सिद्धि

1.अणिमा 2. महिमा 3. गरिमा 4. लघिमा . 5.प्राप्ति 6. प्राकाम्य 7. ईशित्व 8. वशित्व

✳ नव निधियां

1.पद्म निधि 2. महापद्म निधि 3. नील 4. मुकुंद निधि 5. नंद निधि 6.मकर निधि 7. कच्छप निधि 8. शंख निधि 9. खर्व निधि

✳ 27 नक्षत्र

1.आश्विन, 2.भरणी, 3.कृतिका, 4.रोहिणी, 5.मृगशिरा, 6.आर्द्रा 7.पुनर्वसु, 8.पुष्य, 9.आश्लेषा, 10.मघा, 11.पूर्वा फाल्गुनी, 12.उत्तरा फाल्गुनी, 13.हस्त, 14.चित्रा, 15.स्वाति, 16.विशाखा, 11.अनुराधा, 18.ज्येष्ठा, 19.मूल, 20.पूर्वाषाढ़ा, 21.उत्तराषाढ़ा, 22.श्रवण, 23.धनिष्ठा, 24.शतभिषा, 25.पूर्वा भाद्रपद, 26.उत्तरा भाद्रपद और 27.रेवती

✳ 12 राशियाँ

1. मेष 2. वृषभ 3. मिथुन 4. कर्क 5. सिंह 6. कन्या 7. तुला 8. वृश्चिक 9. धनु 10. मकर 11. कुम्भ 12.मीन

✳ नवग्रह

1.सूर्य 2.चंद्र 3.मंगल 4.बुध 5.बृहस्पति 6.शुक्र 7.शनि 8.राहू 9.केतु

✳ चार वेद

1.ऋग्वेद 2.यजुर्वेद 3.सामवेद 4.अथर्ववेद

✳ सप्त ऋषि

1.वशिष्ठ 2.विश्वामित्र 3.कण्व 4.भारद्वाज 5.अत्रि 6.वामदेव 7.शौनक

✳ 18 पुराण

1.ब्रह्म पुराण 2.पद्म पुराण 3.विष्णु पुराण 4. वायु पुराण (शिव पुराण)5.भागवत पुराण 6.नारद पुराण 7. मार्कण्डेय पुराण 8.अग्नि पुराण 9.भविष्य पुराण 10.ब्रह्मवैवर्त पुराण 11.लिंग पुराण 12.वाराह पुराण 13.स्कन्द पुराण 14.वामन पुराण 15.कूर्म पुराण 16.मत्स्य पुराण 17.गरुड़ पुराण 18.ब्रह्माण्ड पुराण

✳ सोलह श्रृंगार

1.बिंदी, 2. सिंदूर, 3. काजल, 4. मेहन्दी, 5. चूड़ियाँ, 6. मंगल सूत्र, 7. नथ, 8. गजरा, 9. मांग टीका, 10. झुमके, 11. बाजूबंद, 12. कमरबंद, 13. बिछिया, 14. पायल, 15. अंगूठी, 16. स्नान

फिल्म फेस्टिवल राजस्थान में जुटे राजस्थानी फिल्म इंडस्ट्री के लोग

जयपुर (संस्कार सृजन)

मान पैलेस जयपुर में राष्ट्रीय करणी सेना राजस्थानी फिल्म एसोसिएशन के बेनर तले आयोजित फिल्म फेस्टिवल राजस्थान कार्यक्रम में भारी संख्या में राजस्थानी फिल्म इंडस्ट्रीज के लोग जुटे ।फेस्टिवल की चीफ गेस्ट बॉलीवुड एक्ट्रेस भाग्यश्री रही ।राजस्थानी फिल्म इंडस्ट्री में अमूल्य योगदान देने वाली हस्तियों को सम्मानित किया गया । इसी कड़ी में आने वाली राजस्थानी फीचर फिल्म 'हमारी बेटियां' की एक्टर , सिंगर, कोरियोग्राफर और आरपी डांस और म्यूजिकल ग्रुप की फाउंडर रेखा परिहार को फिल्मों में योगदान के लिए सम्मानित किया गया । रेखा को यह सम्मान राष्ट्रीय करणी सेना के अध्यक्ष शिवसिंह शेखावत ,पद्म श्री गुलाबो सपेरा,स्वर कोकिला सीमा मिश्रा और फिल्म अभिनेत्री भाग्य श्री के कर कमलों से दिया गया । समारोह में निर्देशक, अभिनेता उग्रसेन तंवर की आने वाली राजस्थानी फीचर फिल्म हमारी बेटियां के पोस्टर की साथियों ने सराहना की और पोस्टर के साथ सेल्फी ली ।

समारोह में वरिष्ठ अभिनेत्री ऊषा श्री, नृत्य निर्देशक पण्डित राजेन्द्र राव,गौरक्षक दल अध्यक्ष शेर सिंह कुमावत,गणेश साहू, नरेंद्र सिंह, प्रियंका सिंह , प्रिया राजपूत,देवराज कुमावत,सुरेश खांडल,संजय भाटी , राहत कुरैशी,ज्योत्सना कौशिक, मधु भाट, अशोक खडोलिया, दीपक गुप्ता , अनिल सैनी, संतोष कंवर, संगीता सिंह , आर सी मीणा , लखविंदर सिंह, माही कटारिया , सनाया सैनी, त्रिलोक नवलखा , महेश योगी, राजकुमार जांगिड़, रूपल जांगिड़ ,सुरेश मुद्गल , कनिषा सैनी , अमन सिंह, संजय सेन ,शाहिद खान, राजेन्द्र सिंह शेखावत, असलम कायमखानी , अलीशा सोनी , राजेन्द्र सिंह शेखावत, चंद्रभान सिंह, राजवीर पोसवाल,विकास सक्सेना, ममता अग्रवाल, मंजूर अली ,हेमलता राजपूत, हेमंत सीरवी, राजवीर गुर्जर, एमके पीपलीवाल, डी के प्रजापत, रीटा अलेक्जेंडर , दिनेश भारती, गोरी वानखेडे, सुरेश चौहान , धर्मेन्द्र टॉक, विजय लक्ष्मी, महेन्द्र कुमावत, दीपक सोनी, विशजोष शर्मा, सिकंदर चौहान, मुकेश तंवर सहित हजारों की संख्या में राजस्थानी फिल्म इंडस्ट्रीज के लोगों ने शिरकत की ।

संतोष देवी शर्मा की पुण्यतिथि पर हुआ विशाल रक्तदान शिविर

जयपुर (संस्कार सृजन)। शर्मा परिवार द्वारा स्वर्गीय संतोष देवी शर्मा पत्नी सुनील शर्मा की पुण्य स्मृति में द्वितीय विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया ।जिसमें जनता ब्लड बैंक की टीम ने 103 यूनिट रक्त एकत्रित किया ।

रक्तदान शिविर के आयोजक अंकित शर्मा और संयोजक हेमंत सिंह ने बताया कि आज प्रातः 9 बजे से शाम 5 बजे तक आरए फिटनेस, राधा गोविंद कॉम्प्लेक्स,राधास्वामी बाग चौमूं में रक्तदान शिविर में युवा रक्तदाताओं का हुजूम उमड़ पड़ा। रक्तदाताओं ने पुण्यात्मा को रक्तदान कर सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की ।

संतोष देवी के पति सुनील शर्मा ने बताया कि हम सभी को सामाजिक सरोकार के कार्य कर जन्मदिन, शादी की वर्षगाँठ और पुण्यतिथि जैसे दिन मनाने चाहिए । रक्तदान कर हम किसी भी अंजान व्यक्ति की जान बचा सकते हैं ।

रक्तदान शिविर में रामचरण दास महाराज, श्री माँ वैष्णो देवी मंदिर महंत कैलाश भगत, नारंगी देवी, शशि कुमार शर्मा, संस्कार सृजन संस्था उपाध्यक्ष संदीप कुमार शर्मा, अंकिता शर्मा, प्रिया शर्मा, मीना शर्मा, निकिता शर्मा, श्वेता शर्मा, पिंकी शर्मा, आरती शर्मा, गुलशन कुमार, सुरेंद्र चौधरी, विनोद सैनी, राकेश शर्मा सहित कई लोगों ने रक्तदाताओं की हौसला अफजाई की ।

धर्म दर्शन

अंतर्राष्ट्रीय भविष्यवक्ता
पंडित रविन्द्राचार्य

पाक्षिक राशिफल

मेष - आपको कुछ अप्रत्याशित लाभ प्राप्त होगा। नौकरी में आपका प्रभाव और सम्मान बढेगा। पारिवारिक जीवन भी आपका अनुकूल रहेगा लेकिन वाणी पर संयम रखना होगा नहीं तो कोई अपना मुंह फुला सकता है।

वृषभ -आप कार्यक्षेत्र में विपरीत लिंगी साथी सहकर्मियों से सहयोग प्राप्त कर पाएंगे। नौकरी में आपका सम्मान बढेगा। सरकारी क्षेत्र से संबंधित काम में आपको सफलता मिलेगी। आपकी कोई कार्ययोजना सफल होने से आपका मन भी प्रसन्नचित्त रहेगा। वाहन सावधानी से चलाएं

मिथुन - शुरुआत में आपको कुछ मानसिक थकान और तनाव का सामना करना पड़ सकता है। कार्यक्षेत्र में आपके कुछ नया बदलाव दिखेगा । आपको अवसर पर नजर बनाए रखने की जरूरत रहेगी। जीवनसाथी से पूरा सहयोग मिलेगा। आपका राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में प्रभाव बढेगा।

कर्क - शुरू में मानसिक उलझन रहेगी । आपको जोखिम लेने से बचना चाहिए, चोट लगने की आशंका रहेगी और कुछ गलत निर्णय की वजह से मानसिक तनाव भी मिल सकता है। जो जातक तकनीकी कार्य से जुड़े हुए हैं उनको अपनी तकनीकी क्षमता का लाभ मिलेगा।

सिंह - आपको अधिकारियों से वाद विवाद में उलझने से बचना होगा साथ ही आपको विरोधियो और शत्रुओं से भी सतर्क रहना होगा। सरकारी क्षेत्र का कोई काम फंसा है तो आपको किसी अनुभवी व्यक्ति की मदद से फायदा हो सकता है। उधार लेनदेन करने से बचना चाहिए नहीं तो परेशानी हो सकती है।

कन्या - आपकी सफलता में आपकी चतुर बुद्धि का बड़ा हाथ होगा। आप परंपरा से हटकर कुछ नया आजमाने का प्रयास कर सकते हैं। लव लाइफ में भी आपके प्रेम और सामंजस्य बना रहेगा । अपने खर्च पर आपको संयम रखना होगा। छात्र तकनीकी शिक्षा में बेहतर कर पाएंगे।

तुला - बीमार चल रहे जातकों की सेहत में सुधार होगा। आपकी कोई अटकी योजना पूरी होगी। लव लाइफ में प्रेम और आपसी सामंजस्य बना रहेगा। कोई मित्र आपकी मदद भी कर सकता है। संतान से संबंधित चिंता का समाधान होगा। वैवाहिक जीवन में आपके प्रेम बना रहेगा। जीवनसाथी से कोई सरप्राइज गिफ्ट भी मिल सकता है।

वृश्चिक - आपको कोई बड़ा लाभ मिलने का योग बना है। नौकरी में अनुकूल स्थिति बनी रहेगी। आपको साथी सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। इस हफ्ते अधिकारियों के साथ भी आपका तालमेल बना रहेगा। कोई पैतृक धन संपत्ति का मामला फंसा है तो उसके भी सुलझने की संभावना बनेगी।

धनु - कार्यक्षेत्र में आपको अपने अनुभव और ज्ञान का फायदा मिलेगा। जो लोग नौकरी में बदलाव के लिए प्रयासरत हैं उनको कामयाबी भी मिल सकती है। आपके लिए भाग्य कुछ नए अवसर लेकर आने वाला है। धर्म अध्यात्म के क्षेत्र में आपकी रुचि बढेगी। प्रबंधन क्षमता का आपको फायदा मिलेगा। आपको जीवनसाथी से पूरा सहयोग और सपोर्ट मिलेगा।

मकर - आपको सरकारी क्षेत्र के काम में भी सफलता मिलेगी। आर्थिक पक्ष आपका संतुलित और सामान्य बना रहेगा। नौकरी में भाग्य आपको कुछ बड़ा अवसर भी दिला सकता है। कामकाज के सिलसिले में यात्रा का संयोग बनेगा । कुछ अप्रत्याशित खर्च भी हो सकता है।

कुंभ- आपका दिमाग आपको सीधे रास्ते की बजाय पगडंडियों से ले जाने का काम करेगा और आप परंपरा से हटकर कुछ ना कुछ नया करेंगे। आप कहेंगे कुछ और करेंगे कुछ । आपको बड़े फैसले बहुत ही संभलकर लेंगे। स्वास्थ्य भी आपका नरम गरम रह सकता है। पेट और नस नाड़ी से संबंधित कुछ समस्या होने की आशंका रहेगी।

मीन -आप कार्यक्षेत्र में कुछ नए अवसर प्राप्त कर पाएंगे। कुछ कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करना होगा छात्र शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन कर पाएंगे। जो जातक प्रॉपर्टी से संबंधित काम करते हैं उनको कोई अच्छी डील मिल सकती है। आपको परिवार के साथ सुखद समय बिताने का मौका मिलेगा।

(कहानी) अभागा

प्रभाती लाल सैनी

वर्षों पहले एक घने जंगल में चार चोर रहते थे। चुराया हुआ धन वे एक साधारण से बर्तन में रखते थे लेकिन उसकी हिफाजत जान से भी ज्यादा करते थे। कुछ अरसे बाद उनका मन चोरी चकारी से ऊब गया।

मैं तो ऐसी जिंदगी से तंग आ गया हूँ। हमें हमेशा चौकन्ना रहना पड़ता है, वरना हम पकड़े भी जा सकते हैं। एक ने अपना दुखड़ा रोया।

हाँ, मैं भी चाहता हूँ कि हम लोग एक शांत - सच्ची जिंदगी जिएं! दूसरे चोर ने हाँ में हाँ मिलाई।

बहुत अच्छा! हम जंगल छोड़कर किसी ऐसे शहर चलते हैं, जहाँ हमें कोई जानता न हो। शायद कोई साफ- सुथरा काम - धंधा ही हाथ लग जाए, तीसरा बोला।

तीन चोरों को तो यह सुझाव पसंद आया और उन्होंने तय कर लिया कि वे जंगल छोड़ देंगे। लेकिन चौथे चोर को अपनी जीविका के लिए कोई खरा धंधा करने की योजना पसंद नही आई।

उस समय तो वह चुप रहा लेकिन उसने बर्तन में रखे पैसे चुराकर भाग जाने का इरादा कर लिया। वह सही मौके का इन्तजार करने लगा।

चारों चोर एक शहर पहुंचे और वहां एक धर्मशाला 'छत्रम्' में रुक गए। उनमें से दो शहर के बारे कुछ जानकारी हासिल करने निकल पड़े।

जल्दी ही उन्होंने एक वृद्ध औरत का घर देखा, जो आरामदेह तो लगता ही था, उनके लिए ठीक भी था। दोनों ने छत्रम् लौटकर अपने साथियों से वृद्धा के घर जाकर जिक्र किया। वे भी सहमत हो गए और चारों चोर उस घर के लिए निकल पड़े।

हम चारों व्यापारी हैं, एक चोर बोला, और इस शहर में कुछ काम- धंधा शुरू करना चाहते हैं। हमें आपका घर पसंद आया और इसके कुछ कमरे किराए पर लेना चाहते हैं।

हम जब तक यहाँ रहेंगे, आपको अच्छा किराया देते रहेंगे, दूसरा बोला। बुढ़िया बहुत खुश थी और उसने अपने मेहमानों की खूब खातिरदारी की। आप यहाँ जब तक चाहें रह सकते हैं, वह मुस्कराई। वह प्रसन्न हुई कि उसे अच्छे किराएदार मिल गए हैं।

चारों चोर पता लगा चुके थे कि वह बहुत नेक और सच्ची औरत है, जिसे पराई दौलत का लालच नही है। इसलिए उन्होंने अपना पैसों ने भरा बर्तन बुढ़िया को संभालने के लिए दे दिया।

कृपया इस बर्तन को ध्यान से रखिएगा। एक ही शर्त है- इसे देना तभी जब हम चारों साथ में इसे मांगने आएं। ठीक है! बुढ़िया ने बर्तन लेते हुए कहा। वह अपने घर के पिछवाड़े गई और देखने लगी कि कोई देख तो नही रहा। जब उसे तसल्ली हो गई तो उसने जमीन खोदकर उसमें बर्तन डाला और उसे वापस मिटटी से ढक दिया।

चारों ओर कुछ काम- धंधे की तलाश में शहर चले गए। जल्दी ही वे काफी थक गए और बुढ़िया के घर से कुछ ही दूरी पर खड़े वटवृक्ष के नीचे बैठकर सुस्ताने लगे।

तभी एक औरत लस्सी बेचती हुई वहां से निकली। चारों ने थोड़ी लस्सी खरीदने का निश्चय किया। लस्सी बहुत स्वादिष्ट थी। उन्होंने सोचा कि दोपहर के भोजन के साथ पीने के लिए थोड़ी लस्सी भी ले ली जाए।

पर तीन चोर तो बहुत थक गए थे। लस्सी डालने के लिए बुढ़िया के घर से बर्तन लाने की हिम्मत किसी में नही थी। चौथा चोर, जो किसी ऐसी ही घड़ी की प्रतीक्षा में था, झट से जाने के लिए तैयार हो गया।

वह बुढ़िया के घर पहुंचकर बोला, मुझे मेरे साथियों ने बर्तन लाने के लिए भेजा है।

लेकिन मैं तो यह बर्तन तभी दूँगी, जब तुम चारों इकट्ठे आओगे, वह मना करती हुई बोली।

उस चोर के दिमाग में एक विचार आया।

मेरे साथी यहाँ से कुछ ही दूर केले के पेड़ तले बैठे हैं। आप खुद ही पूछ ले, उसने राय दी।

बुढ़िया घर से बाहर निकली। उसने तीनों को पेड़ के नीचे बैठे हुए देखा। क्या आपने अपने दोस्त को बर्तन लाने भेजा है? वह चिल्लाई।

जी! कृपया उसे दे दीजिये। तीनों चोरों ने जवाब दिया।बुढ़िया ने सोचा कि उन्हें अपना बर्तन किसी कार्य हेतु चाहिए होगा, जो उन्होंने अपना विश्वसनीय साथी भेजा है। उस चोर को फावड़ा देती हुई वह बोली कि पिछवाड़े से खोदकर बर्तन निकाल ले। इतना कहकर वह अपने घर के कामों में उलझ गई। चोर ने बर्तन निकाला और चुपके - से पिछले दरवाजे भाग खड़ा हुआ। इस बीच उसके दोस्त चिंतित हो रहे थे। काफी वक्त बीत चूका था और उनके साथी का कुछ पता नही था। तीनों बुढ़िया के घर गए।

हमने अपना साथी एक बर्तन लाने भेजा था। वह कहाँ है? उन्होंने पुछा। मैंने तो बहुत पहले ही उसे बर्तन खोदने के लिए कुदाली दी थी। उसने आपको बर्तन नही दिया? बुढ़िया हैरान थी। तीनों चोर समझ गए कि उनके साथी ने उन्हें धोखा दिया है।

हमने आपको कहा था कि बर्तन तभी देना जब हम चारों आपके पास आएं। आपने हमारी बात नही मानी। हमें लगता है कि हमारे साथी ने आपके साथ मिलकर हमारा पैसा हथियाने का षडयंत्र रचा है! वे बोले। बुढ़िया बहुत दुखी हुई।

वे तीनों उसे शहर के न्यायाधीश के पास ले गए और उसकी शिकायत की। न्यायाधीश ने फैसला दिया कि बुढ़िया की लापरवाही की वजह से तीनों को नुकसान हुआ है, इसलिए सारा हर्जाना बुढ़िया को ही भरना होगा। बुढ़िया रोती हुई घर लौट आई। इस बीच राजा और उसका मंत्री वेश बदलकर अपनी प्रजा की परेशानियां जानने शहर के दौरे पर थे। इस बात का किसी को भी पता नही था। बुढ़िया को देखकर वे रुक गए और उसके रोने का कारण पूछने लगे।

उसी समय आसपास ही कुछ लड़के खेल रहे थे और उनका अगुआ था रामन। बुढ़िया की दुखभरी कहानी उसने भी सुनी।

भगवान करे, उन तीनों को तुम्हारे साथ ऐसा सुलूक करने की सजा मिले, रामन बोला।

यह सुनकर राजा और उसका मंत्री बहुत हैरान हुए। उन्होंने रामन से पुछा कि क्या वह इस मामले का फैसला कर सकता है?

रामन ने आत्मविश्वास के साथ सिर हिलाया और कहा कि वह अपना फैसला राजा के दरबार में ही सुनाएगा।

अगले दिन महल में दरबार लगा। रामन न्यायाधीश के आसन पर बैठा था। उसने चोरों की कहानी सुनी।

तुम्हारी शर्त यही थी न कि बुढ़िया वह बर्तन तुम्हे तभी दे, जब तुम चारों उसे लेने आओ? रामन के प्रश्न पर तीनों ने हामी भर दी।

बहुत अच्छा! वह शर्त पूरी करने के लिए तैयार है। पर यहाँ तो तुम सिर्फ तीन हो। जाओ, अपना चौथा साथी लेकर आओ जिससे शर्त पूरी की जा सके! रामन ने आदेश दिया।

शाबाश! क्या फैसला दिया है! राजा ने रामन की भूरि - भूरि प्रशंसा की। तुम छोटे हो, पर हो समझदार! आज से तुम 'मर्यादा रामन' के नाम से जाने जाओगे और हमारे दरबार में ऐसे मुकदमों के फैसले किया करोगे।

7 या 8 फरवरी कब है शबरी जयंती? जानिए सही डेट, महत्व-पूजा विधि

शबरी जयंती रामभक्तों के लिए बहुत विशेष पर्व है। यह वह दिन है जब भगवान राम ने माता शबरी के जूठे बेर खाकर भक्ति की पराकाष्ठा दिखाई थी। शबरी का प्रेम और प्रतीक्षा आज भी भक्तों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को शबरी जयंती मनाई जाती है। 2026 में यह पर्व 8 फरवरी दिन रविवार को मनाया जाएगा। आइए जानते हैं सही तिथि, महत्व और पूजा विधि के बारे में।

शबरी जयंती की सही तिथि और समय-वैदिक पंचांग के अनुसार, फाल्गुन कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि 8 फरवरी 2026 को रात 2:54 बजे शुरू होगी और 9 फरवरी को सुबह 5:01 बजे समाप्त होगी। उदयातिथि के आधार पर शबरी जयंती 8 फरवरी को मनाई जाएगी। यह तिथि विश्वसनीय पंचांगों से ली गई है। 8 फरवरी को ही मुख्य पूजा-अर्चना और व्रत रखा जाएगा।

शबरी जयंती का धार्मिक महत्व-शबरी जयंती भक्ति, प्रेम और प्रतीक्षा का प्रतीक है। रामायण में शबरी राम के वनवास काल में वर्षों तक उनकी प्रतीक्षा करती रहीं। जब राम उनके आश्रम पहुंचे, तो शबरी ने प्रेमपूर्वक जूठे बेर खिलाए। भगवान राम ने इसे सच्ची भक्ति का प्रतीक मानकर स्वीकार किया और शबरी को परम धाम प्रदान किया। यह प्रसंग बताता है कि भगवान को बाहरी दिखावा नहीं, बल्कि निश्छल प्रेम और भावना प्रिय है। इस दिन व्रत और पूजा करने से भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

शबरी जयंती पूजा विधि

शबरी जयंती पर पूजा सरल लेकिन श्रद्धापूर्ण होनी चाहिए।

सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और साफ वस्त्र धारण करें।

घर के मंदिर में राम-शबरी की तस्वीर या मूर्ति स्थापित करें।

धूप-दीप जलाएं, फूल, फल और बेर का प्रसाद चढ़ाएं।

भगवान राम और शबरी माता को तुलसी दल, चंदन और सिंदूर अर्पित करें। रामायण के शबरी प्रसंग का पाठ या कथा सुनें।

रामाय नमः या नमो भगवते रामचन्द्राय मंत्र का जप करें।

शाम को आरती करें और रात्रि में भजन-कीर्तन करें।

अगले दिन पारण में फल या सात्विक भोजन ग्रहण करें।

शबरी जयंती की विशेष बातें-शबरी जयंती का व्रत रखने से भक्तों को प्रेम, भक्ति और धैर्य की शक्ति मिलती है। विवाह में देरी या बाधा होने पर इस दिन पूजा करने से शुभ फल मिलता है। गरीबों में अन्न, फल या बेर का दान करने से अक्षय पुण्य प्राप्त होता है। शबरी का प्रेम आज भी रामभक्तों को प्रेरित करता है कि सच्ची भक्ति में बाहरी दिखावा नहीं, बल्कि भाव जरूरी है।

भगवान राम ने भी रखा था विजया एकादशी का व्रत,जानिए इसकी पूरी कथा

विजया एकादशी फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि को मनाई जाती है। यह व्रत विजय, सफलता और शत्रुओं पर जीत का प्रतीक है। पद्म पुराण और स्कंद पुराण में इस एकादशी का विस्तृत वर्णन मिलता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्वयं भगवान श्रीराम ने लंका विजय से पहले इस व्रत को किया था। इस एकादशी का व्रत रखने से व्यक्ति को जीवन में हर प्रकार की विजय प्राप्त होती है। 2026 में विजया एकादशी 13 फरवरी, दिन शुक्रवार को रखी जाएगी। आइए जानते हैं इसकी पूरी कथा, महत्व और पूजा विधि।

विजया एकादशी की कथा और भगवान राम का व्रत-रामायण के अनुसार, जब भगवान श्रीराम वनवास के दौरान लंका पर चढ़ाई करने के लिए समुद्र तट पर पहुंचे, तो सामने विशाल और भयंकर समुद्र था। उसमें खतरनाक जल जीव थे और पार करने का कोई आसान रास्ता नहीं दिख रहा था। श्रीराम चिंतित हो गए और लक्ष्मण से बोले कि समुद्र पार करने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा। लक्ष्मण ने कहा कि पास ही मुनि बकदाल्भ्य का आश्रम है, जो बहुत ज्ञानी हैं। उनसे मार्गदर्शन लें। श्रीराम मुनि के आश्रम पहुंचे और उन्हें प्रणाम किया। मुनि ने श्रीराम को पहचानकर प्रसन्न होकर स्वागत किया।

जब श्रीराम ने समुद्र पार करने का उपाय पूछा, तो मुनि बकदाल्भ्य ने कहा कि फाल्गुन कृष्ण पक्ष की विजया एकादशी का व्रत करने से निश्चित रूप से विजय प्राप्त होगी। मुनि ने विधि बताई कि इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने से शत्रुओं पर विजय मिलती है। श्रीराम ने मुनि की आज्ञा मानकर विजया एकादशी का व्रत रखा। व्रत के प्रभाव से वे वानर सेना के साथ समुद्र पार करने में सफल हुए, रावण का वध किया और माता सीता को वापस लाए। इस कथा से सिद्ध होता है कि विजया एकादशी का व्रत शत्रु विजय और सफलता का सर्वोत्तम साधन है।

विजया एकादशी का धार्मिक महत्व-पद्म पुराण में कहा गया है कि विजया एकादशी का व्रत रखने से व्यक्ति को विजय, सुख, समृद्धि और शत्रुओं पर जीत प्राप्त होती है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा से भय से मुक्ति मिलती है और सभी कार्य सफल होते हैं। यह व्रत विशेष रूप से उन लोगों के लिए लाभकारी है जिन्हें जीवन में बाधाएं, शत्रुता या असफलता का सामना करना पड़ रहा है। व्रत से पिछले जन्मों के पाप नष्ट होते हैं और पुण्य की प्राप्ति होती है। इस दिन दान-पुण्य करने से अक्षय फल मिलता है।

राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाना लक्ष्यःमुख्यमंत्री

जयपुर(नि.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि जैन धर्म केवल एक धर्म नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक पूर्ण कला है। इस धर्म के पंच महाव्रत आज के भौतिकवादी युग में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने सदियों पहले थे। उन्होंने कहा कि संत, मुनि, महंत समाज को दिशा देने का काम करते है तथा हमारी समृद्ध संस्कृति को दुनियाभर में पहुंचाते है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य है कि राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखते हुए उसे नई पीढ़ी तक पहुंचाया जाए। शर्मा शुक्रवार को लाडनूं के जैन विश्व भारती परिसर में आयोजित सुधर्मा सभा प्रवचन हॉल के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का पधारना राजस्थान के लिए अत्यंत सम्मान और गौरव का विषय है। जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में सुधर्मा सभा का लोकार्पण भी हो रहा है। यह आने वाले समय में मानवीय मूल्यों और धार्मिक शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बनेगा।

जैन धर्म द्वारा अहिंसा के संदेश ने मानवता को दिखाई दिशा

मुख्यमंत्री ने कहा कि जैन धर्म अहिंसा का संदेश देकर प्रकाश स्तंभ की तरह मानवता को दिशा दिखा रहा है। जैन दर्शन ने 'जियो और जीने दो' का जो मूलमंत्र दिया है, वह आज पर्यावरण संरक्षण का सबसे बड़ा आधार बन चुका है। उन्होंने कहा कि इस धर्म की यह विशेषता रही है कि इसने हमेशा प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलने की शिक्षा दी है। आज जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन से चिंतित है, तब जैन धर्म के सिद्धांत हमें यह बताते हैं कि संयम और सादगी के बिना मानवता का भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता।

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी लाखों लोगों के लिए प्रेरणास्रोत

शर्मा ने कहा कि पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी मानवीय मूल्यों के जीवंत प्रतीक हैं। इनकी साधना, ज्ञान और त्याग लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। इन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानव कल्याण और धर्म प्रचार के लिए समर्पित कर दिया है। उन्होंने कहा कि आचार्य जी ने जैन धर्म की प्राचीन परंपराओं को आधुनिक समय के साथ जोड़कर एक नई दिशा दी है। उनका यह योगदान केवल जैन समाज के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए वरदान है।

बलाई विकास समिति की बैठक हुई संपन्न

जयपुर (संस्कार सृजन)। चौमूं शहर के मोरीजा रोड स्थित बलाई समाज सभा-भवन में बलाई विकास समिति, जयपुर (मुख्यालय-चौमूं) की बैठक वरिष्ठ समाजसेवी लालाराम मेहरडा की अध्यक्षता में हुई। इससे पूर्व संत रविदास जयंती पर संत रविदास महाराज के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पुष्पांजलि अर्पित की। इसके पश्चात उपस्थित सभी पदाधिकारी ने कहा कि संत रविदास ने जातिगत भेदभाव का खंडन किया। आंतरिक भक्ति व सामाजिक समानता पर जोर दिया। समिति के अध्यक्ष एडवोकेट बद्रीनारायण परिहार व महासचिव सुरेन्द्र सिंह हरसोलिया ने बताया कि बैठक में समिति द्वारा आगामी 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं का सम्मान समारोह करने का निर्णय लिया गया। साथ ही भूमि खरीद व भवन निर्माण हेतु चर्चा की गई।इस दौरान समिति के उपाध्यक्ष राजपाल सिंह नारनोलिया, कालूराम सामरिया, उप महासचिव हनुमान सहाय झाटीवाल, उपकोषाध्यक्ष नानगराम लुनीवाल, सचिन सांवरमल छेडवाल, गोपाल लाल बुनकर, संगठन सचिव मुकेश कुमार कालोया, कार्यकारिणी सदस्य घीसालाल बबेरवाल, गुलाब नाथ बुढगाया, गोपाल लाल देवठिया, तुलसीराम बामनिया आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय कैडेट कोर विद्यार्थी जीवन को गढ़ने वाला संगठनःराज्यपाल

जयपुर(नि.सं.)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने राष्ट्रीय कैडेट कोर को विद्यार्थी जीवन को गढ़ने वाला बताते हुए कहा कि यह देश का अनुशासित, राष्ट्र प्रतिबद्ध सैन्य प्रशिक्षण से ही जुड़ा संगठन नहीं है बल्कि आपदा काल में देश सेवा से जुड़ा भी प्रमुख संगठन है। उन्होंने गणतंत्र दिवस परेड में राजस्थान कैडेट्स के परेड में भाग लेने और सांस्कृतिक आयोजनों में उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की। राज्यपाल बागडे शुक्रवार को लोकभवन में दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने वाले एनसीसी कैडेट्स के सम्मान समारोह में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि एनसीसी युवाओं के चरित्र निर्माण के साथ-साथ सेवा और एकता की भावना जगाने वाला संगठन है। उन्होंने कहा कि एनसीसी कैडेट्स एक बार इसमें आता है तो फिर हमेशा राष्ट्र के लिए समर्पित हो जाता है। उन्होंने सभी को देश को समृद्ध बनाने में भूमिका निभाने का आह्वान किया। उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने एनसीसी को चरित्र निर्माण की पाठशाला बताते हुए कहा कि राज्य सरकार इस संगठन के विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। उन्होंने एनसीसी कैडेट्स को सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के लिए कार्य करने का आह्वान किया।

इससे पहले राज्यपाल बागडे ने एनसीसी के विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त कैडेट्स सीनियर अंडर ऑफिसर मोनिका, सलोनी यादव, नमन चौधरी, आयुषी जैन और अंडर ऑफिसर युवराज राठौड़ को लोकभवन में सम्मानित किया। उन्होंने चयनित कैडेट्स को उपहार भी प्रदान किए। कर्नल नितिन ने गणतंत्र दिवस परेड में राजस्थान के एनसीसी कैडेट्स के विभिन्न क्षेत्रों में प्रदर्शन के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर अतिरिक्त मुख्य सचिव कुलदीप रांका और राज्यपाल के सचिव डॉ. पृथ्वी भी उपस्थित रहे। छात्र-छात्राओं ने इस अवसर पर राजस्थान की लोक संस्कृति और परम्पराओं से जुड़ी नृत्य और संगीत प्रस्तुतियां दी।

बिड़ला बालिका विद्यापीठ, पिलानी की छात्राओं ने गणतंत्र दिवस परेड के दौरान प्रस्तुत राष्ट्र भक्ति से जुड़ी मधुर धुनें बैंड पर पेश की।

डॉ. त्रिलोक चंद्र सोनी 28 साल पहाड़ी सेवा के बाद पहुंचे ऋषिकेश

देहरादून (संस्कार सृजन)

अट्ठाइस वर्षों की ग्रामीण पर्वतीय अंचलों के दुर्गम क्षेत्रों में सेवा करते हुए डॉ. त्रिलोक चंद्र सोनी का पारस्परिक स्थानांतरण पीएम श्री राजकीय इण्टर कालेज वीरभद्र ऋषिकेश होने पर उन्हें विद्यालय द्वारा भावभीनी विदाई दी गई। आपको बता दें कि डॉ. सोनी राइका मरोड़ा, सकलाना में दस वर्षों से प्रवक्ता भूगोल के पद पर कार्यरत थे। सकलाना क्षेत्र में डॉ. सोनी ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अलख जला के रखी थी । उनका यह योगदान स्वर्णिम अक्षरों में रहेगा और आनेवाली पीढ़ी के लिए एक प्रेरणास्रोत बना है। ग्रामीण परिवेश में पले डॉ. त्रिलोक चंद्र सोनी की शिक्षा देवाल के सरकारी स्कूलों से हुई हैं और 28 सालों का अहम जीवन का समय छात्रहित में डी दुर्गम, ई अति दुर्गम व एफ अति विशिष्ट दुर्गम पर्वतीय अंचलों के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के भविष्य संवारने में बिताया है। कौन कहता है ग्रामीण दूरस्थ क्षेत्र के विषम परिस्थितियों में लोग गुमनाम हो जाते है जिसका खासा उदाहरण डॉ. सोनी हैं. जिन्होंने अट्ठाइस साल दुर्गम इलाके में रहते हुए शिक्षक की भूमिका के साथ वृक्षमित्र के रूप में एक अलग पहचान बनाई है । आज डॉ. सोनी शिक्षक के रूप में कम और वृक्षमित्र व पर्यावरणविद् के रूप में उनकी एक अलग पहचान समाज में बनी है।

वृक्षमित्र डॉ. सोनी ने कहा कि जब मेरी 1998 में राउमावि उर्गम में नियुक्ति हुई तो उस समय हेलंग से 14 किमी की पैदल दूरी तय कर विद्यालय पहुंचा जाता था ऐसे जगह मेने सेवा की हैं, मैं नारायण नगर सुनाई, मोलाधार लोस्तू, सुमाड़ी, मरोड़ा सकलाना में रहते हुए अट्ठाइस वर्षों के दौरान विभिन्न चुनियोतियों से गुजरते हुए विषम परिस्थितियों में मैंने छात्रहित में कार्य किया तथा जनहित के मुद्दों पर जन जन को जागरूक किया। पौधे उपहार में भेंट करने, दूल्हा दुल्हन को शगुन में पौधा देने, अपने खास यादगार पलों पर पौधारोपण, जन्मदिन, शादी की सालगिरह, बच्चे के नामकरण, अन्नप्रासन तथा अपनों के नाम पर पौधा रोपण करने की शुरुआत इन ग्रामीण दूरस्थ क्षेत्रों से हुई है। इन कार्यों ने समाज में मुझे नई पहचान दी है। ये अट्ठाइस सालों का दुर्गम क्षेत्र में बिताया हुआ समय मेरे लिए अस्मरणीय रहेगा। विदाई के पल पर प्रधानाचार्य बीआर शर्मा ने कहा मरोड़ा विद्यालय को डाक्टर सोनी ने एक अलग पहचान दी है उनके लगाए हुए पौधे स्कूल की शोभा बढ़ा रहे हैं । वे अपने सामाजिक कार्यों के साथ हमेशा छात्रहित में समर्पित रहते थे उनका मृदुभाषी स्वभाव छात्रों व शिक्षकों में एक जोश भर देता था, उनकी कमी विद्यालय ही नहीं क्षेत्र में रहेगी।

साहिल जोशी जिनका कनिष्ट लिपिक से प्रधान सहायक के पद पर पदोन्नति होने पर उनकी विदाई भी दी गई। कार्यक्रम में किरन सोनी, महावीर धनोला, अनिल हटवाल, अनूप थपलियाल, सुशील कांदली, इंद्रदेव वशिष्ठ, राहुल जोशी, राजेंद्र रावत, रामस्वरूप उनियाल, तेजी महर, पवित्रारानी, शशि डूयूटी, इंदु नेगी, बबीता उनियाल, माधुरी भंडारी तथा कार्यक्रम का संचालन सुशील कांदली ने किया ।

45 वीं छात्रकला प्रदर्शनी के पुरस्कारों की घोषणा

जयपुर (नि.सं.)। राजस्थान ललित कला अकादमी की 45वीं छात्रकला प्रदर्शनी के निर्णायक मण्डल ने राज्य के 10 छात्र-छात्राओं की कलाकृतियों को पुरस्कार योग्य घोषित किया है। अकादमी सचिव डॉ. रजनीश हर्ष ने बताया कि इस प्रदर्शनी में राज्य भर से 208 छात्र-छात्राओं की 536 कलाकृतियां प्राप्त हुई थीं जिसमें निर्णायक मण्डल ने प्रदर्शनी के लिये 110 छात्र-छात्राओं की 145 कलाकृतियों का चयन किया। इनमें पुरस्कृत कलाकृतियां भी सम्मिलित है। प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर पुरस्कृत 10 छात्र-छात्राओं को दस-दस हजार रूपये के नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये जायेंगे । इन छात्रों में अरुण कुमार कुमावत, नागौर (एसेडिंग ग्रेण्डूयर), हर्षा सोनी, ब्यावर (द वाल्स आफ प्रोग्रेस), विजय, जोधपुर (जोधपुरी जारोखा), (वाट अबाउट अस), श्वेता चौहान, जयपुर (अनटाईटिल्ड-1) धर्मेन्द्र पंडित (कंधो पर समाज) शामिल हैं।

डायमंड किड्स स्कूल में मनाया फेयरवेल समारोह

जयपुर (संस्कार सृजन) । चौमूं शहर के मोरीजा रोड स्थित डायमंड किड्स स्कूल का फेयरवेल समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया । ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष लोकेश कुमार दलाका ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की । उन्होंने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया । इसके पश्चात नन्हे-मुन्ने बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए । विद्यालय प्रिंसिपल सलमान न्यारियां ने बच्चों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए अनमोल वचन कहे । सचिव ममता शर्मा व एमडी मोहित कुमार शर्मा ने बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए । संस्था निदेशक नागेश कुमार शर्मा ने आए हुए सभी अतिथियों का माला पहनाकर स्वागत किया और अन्य आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया ।

RNI N0. - RAJHIN/2021/80841
www.sanskarnews.page
EMAIL-sanskarsrijan21@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक राम गोपाल सैनी के लिए उदय प्रिन्टर्स 43 ए, माली कॉलोनी, चांदपोल, जयपुर से मुद्रित तथा वार्ड नं.1, सामोद रोड़ नीमड़ी, ग्राम-मोरीजा, तहसील-चौमूँ, जिला-जयपुर से प्रकाशित।

उपसंपादक- रजनीश सैनी